I

Lecture Series No:- 45

Online class
Date - 4/2/2022
Day - [illegible]
Time - 10:50 to 11:40 A.M

Topic,

(1) Gita,

Dr. Sujita Kumari
Depart. of Philosophy,
B.A Part - II
paper - (5.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur,

Ans:- गीता लोकसंग्रह की भावना के कारण ही लोकधर्मिता के चलते ही गीता का संदेश सार्वभौम महत्व रखता है। यह केवल श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया संदेश नहीं है। अर्जुन के बहाने सारे मानव समुदाय को लोकधर्म का अमूल्य उपदेश दिया गया है।

भगवान द्वारा दिए गए उपदेश अर्जुन सरीखे अन्य किंकर्तव्यविमूढ़ लोगों के लिए भी अत्यंत उपयोगी है।

भगवान श्रीकृष्ण का कहना है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव जैसे अधर्मियों एवं पापियों

P.T.O.

का नाश करना अर्जुन जैसे योद्धा के लिए परम वांछनीय है किन्तु ममता एवं मोह के वशीभूत वह अपना कर्तव्य भूल रहा है। कृष्ण उसे लोककल्याण के नाम पर युद्ध करने की नेक सलाह देते हैं। उनका आदेश है कि अन्याय के लिए ~~भाई~~ भाई को भी दंड देना धर्म ही है। इस उपदेश को सुन अर्जुन ममता - मोह के बंधन से मुक्त होकर धनुर्बाण संभालता है और क्रूर एवं आततायी कौरवों का संहार करता है।

P.T.O.

(3)

ऐसा लगता है कि गीता के रचयिता महर्षि व्यास ने श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के वार्तालाप को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रखते हुए सामान्य और में प्रस्तुत किया है।

कुरुक्षेत्र का मैदान मनुष्य का शरीर है, जहाँ दैवी एवं आसुरी प्रवृत्तियों के बीच सदैव संग्राम छिड़ा रहता है। अर्जुन वह

किंकर्तव्यविमूढ़ जीव जैसा है, जो अपने कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान नहीं रखता। भगवान श्रीकृष्ण मनुष्य की आत्मा के प्रतीक हैं। आत्मा सदैव व्यक्ति को धर्म - अधर्म के संघर्ष में धर्म का पक्ष लेने और अधर्म का विरोध करने की सलाह देती रहती है। इसी प्रकार गीता में वर्णित महाभारत का युद्ध भी अंतःकरण

"END"